

बुन्देलखंड क्षेत्र में मसूर फसल के प्रमुख कीट-पतंग

कटुआ कीट: रात्रि में पौधों के तनों को जमीन की सतह से काटकर गिरा देता है। जैविक उपचार हेतु बैबेरिया वैसियाना की 30-40 ग्राम मात्रा को प्रति 10 कि.ग्रा. गोबर में मिला कर खेतों में डालना चाहिए तथा रासायनिक उपचार हेतु क्लोरपाइरीफास 20 प्रतिशत ई.सी. की 1250 मिली. मात्रा को 500-600 लीटर पानी में घोल बनाकर प्रति हे. की दर से छिड़काव करें।

सेमीलूपर: इल्ली हरे रंग की व अर्ध गोलाकार लूप में चलती हैं पौधों के पत्ते, कोमल टहनियाँ, कलियाँ, फूल तथा फली को खाकर नुकसान पहुंचाती है।

फली छेदक/फली बेधक कीट : इस कीट की इल्ली पौधों की पतियों और फली के अंदर के दानो को खाकर नष्ट कर देती हैं। इसके नियंत्रण हेतु फूल एवं फलियाँ बनते समय 5 फेरोमोन ट्रेप और 2 प्रकाश प्रपंच प्रति हे. की दर से खेतों में लगाएं। तथा नीम के बीज आर्क (5 प्रतिशत) प्रति लीटर पानी के साथ छिड़काव करें।

काला माहू: ये कीट पौधों की पतियों, तनों और फूलों से रस चूसता है जिससे पतियों और फूल पूर्णतया सूखकर गिर जाते हैं। खाली टिन के 10 डब्बों को पीला रंग से पोत कर उनके ऊपर एक परत पारदर्शी ग्रीस लगाये और लम्बे लकड़ी के डंडे पर लगाकर 25 मीटर की दूरी पर इन सभी डब्बों को एक हेक्टेयर क्षेत्र में लगा दें। इमिडाक्लोपिड 17.8 एस. एल. 0.2 मिली. प्रति लीटर पानी के साथ मिलाकर प्रति हे. की दर से छिड़काव करें।

उत्पादन: 10-19 क्विंटल प्रति हेक्टेयर।

फसल की कटाई एवं भंडारण: बीजों में नमी का स्तर 15 प्रतिशत पर फसल के कटाई के लिए उपयुक्त मानी जाती हैं। 10 तक प्रतिशत तक बीजों को सूखे एवं छायादार वाली जगह जो कीट पतंगों से रहित हो।

प्रमुख रोग एवं कीटों की पहचान



चित्र सं. 1:
फली छेदक/बेधक कीट



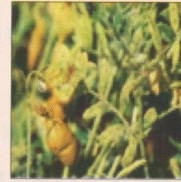
चित्र सं. 2:
बीज अंकुरण नष्टकरता



चित्र सं. 3:
बधुवा



चित्र सं. 4:
विल्ट (उकटा)



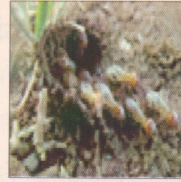
चित्र सं. 5:
रतुआ रोग



चित्र सं. 6:
अस्कोक्वटा ब्लाइट



चित्र सं. 7:
कटुआ कीट



चित्र सं. 8 :
काला माहू



चित्र सं. 9:
सेमीलूपर



विशेष जानकारी हेतु सम्पर्क करें:

डॉ. एस.एस. सिंह

निदेशक प्रसार शिक्षा

प्रसार शिक्षा निदेशालय

दूरभाष : +91-789746699

ई-मेल : directorextension.rlbcu@gmail.com

प्रकाशित:

कुलपति

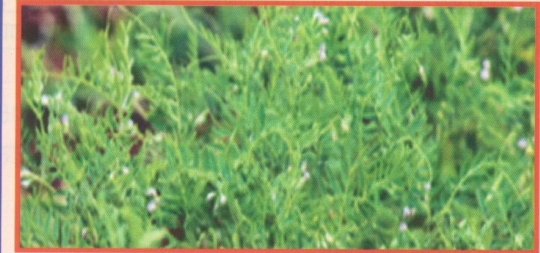
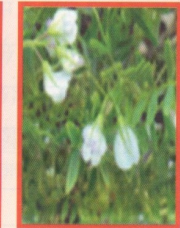
रानी लक्ष्मी बाई केन्द्रीय कृषि विश्वविद्यालय

झाँसी 284003, उत्तर प्रदेश (भारत)

मुद्रक : क्लासिक इण्टरप्राइजेज, झाँसी, 7007122381

प्र.शि.नि./त.प्र.सा.-फोल्डर/2023/66

बुन्देलखण्ड में मसूर की वैज्ञानिक खेती



अर्पित सूर्यवंशी, अंशुमान सिंह, मीनाक्षी आर्य,
अखौरी निशांत भानु, अनिल कुमार राय,
भरत लाल, माईमोम सोनिया देवी,
राजीव नंदन एवं सुशील कुमार चतुर्वेदी



प्रसार शिक्षा निदेशालय

रानी लक्ष्मी बाई केन्द्रीय कृषि विश्वविद्यालय

झाँसी 284003, उत्तर प्रदेश (भारत)

वेबसाइट : www.rlbcu.ac.in

बुंदेलखंड में मसूर की वैज्ञानिक खेती

बुंदेलखंड क्षेत्र में मुख्यतः चार तरह की मिट्टी पाई जाती हैं जैसे राकड़, परवा, काबर और मार। मसूर रेशों व प्रोटीन का एक अत्यंत महत्वपूर्ण श्रोत है। इसके पत्ते, तना, और टूटे हुए फलियाँ भी जानवरों के लिए एक उच्च आहार का काम करते हैं।

दलहनी फसलों की खेती के मुख्य लाभ: वैज्ञानिक पद्धति द्वारा खेती कर अतिरिक्त आय के साथ-साथ खेत की उर्वरक क्षमता बढ़ने सहायक है। इन फसल की जड़ों में मौजूद छोटी-छोटी गांठें नाइट्रोजन स्थिरीकरण की प्रक्रिया के माध्यम से लगभग 72 से 350 कि. ग्रा. नाइट्रोजन प्रति हेक्टेयर प्रति साल की दर से मृदा में बढ़ाते हैं।

मानव स्वास्थ्य के लिए मसूर

प्रोटीन	24-26 प्रतिशत	रेशा	3.2 प्रतिशत
वसा	1.3 प्रतिशत	कैल्शियम	69मि.ग्रा./100 ग्राम
फॉस्फोरस	300 मि.ग्रा./100 ग्राम	कार्बोहाइड्रेट	57-60 प्रतिशत
लोहा	7 मि.ग्रा./100ग्रा	विटामिन सी	10-15मि.ग्रा./100 ग्रा.

विटामिन ए: 450 आई. यू. (सभी दलहन फसलों में सर्वाधिक)

❖ **बुंदेलखंड में मसूर की खेती:** उत्तर प्रदेश में मसूर का उत्पादन 15.91 से 17.95 लाख किंवाटल जबकि मध्य प्रदेश में 8.5 से 9.4 किंवाटल प्रति हेक्टेयर तक दर्ज की गयी है।

बुंदेलखंड में मसूर की उन्नत किस्में:

किस्में	वर्ष	अवधि(दिन)	उपज (कुं.हे.)	मुख्य विशेषताएँ
एल-4729	2020	96-110	12-14	उकठा के लिए मध्यम प्रतिरोधी
आईपीएल 329	2020	120-125	10-11	उकठा एवं रतुआ के लिए प्रतिरोधी, बड़ा दाना
आईपीएल 225	2020	105-120	10-11	उकठा एवं रतुआ के लिए प्रतिरोधी, छोटा दाना
आरकेएल 58 एफ 3715	2020	110-115	18-19	रतुआ एवं झुलसा रोगरोधी, उकठा एवं फली बेधक और माहू के लिए मध्यम प्रतिरोधी
कोटा मसूर 3 (RKL 605-03)	2020	105-110	18-19	मुरझान के प्रति मध्यम प्रतिरोधी और सूखे और तापमान के प्रति सहिष्णु
आरवीएल 13-5	2019	103-109	11-13	उकठा के लिए प्रतिरोधी, बड़ा दाना
आरवीएल 13-7	2019	99-103	12-14	उकठा के लिए प्रतिरोधी, बड़ा दाना
आईपीएल 526	2018	101-110	10-12	रतुआ एवं उखटा के लिए सहनशील
कोटा मसूर-2 (RKL 14-20)	2018	97-104	12-14	सूखे और उच्च तापमान के लिए प्रतिरोधी
एल-4727	2018	96-106	11-13	उकठा के लिए मध्यम प्रतिरोधी
आईपीएल 315	2018	135-140	11-12	रतुआ के लिए प्रतिरोधी और उकठा के लिए सहनशील
आईपीएल 321	2018	130-135	9-10	उकठा के लिए प्रतिरोधी
कोटा मसूर-1 (RKL 607-1)	2017	98-107	10-12	सूखे और उच्च तापमान के लिए प्रतिरोधी
आर वी एल 11-6	2017	107-113	12-13	उकठा एवं झुलसा
एल-4717 (पूसा अगेती मसूर)	2017	96-106	12-13	उकठा एवं चाँदनी के लिए प्रतिरोधी

❖ **जलवायु:** वनस्पतिक विकास के दौरान ठंड तथा परिपक्व अवस्था में गर्म तापमान की आवश्यकता होती है।

❖ **खेतों की तैयारी तथा मृदा के प्रकार:** उचित जल निकासी प्रबंधन के साथ दोमट मट्टी सही मानी जाती है। मिट्टी भुरभुरी और खर-पतवार से मुक्त होनी चाहिए।

❖ **बीज बोने का समय:** वर्षा आधारित खेती के लिए अक्टूबर के दूसरे पखवाड़े में तथा सिंचित खेती के लिए नवम्बर माह के प्रथम पखवाड़े तक (15 अक्टूबर से 15 नवम्बर तक) बीजों की बुआई कर देनी चाहिए।

❖ **बीज दर एवं बुआई:** छोटे बीज 40-45 कि.ग्रा. प्रति हेक्टेयर तथा मोटे बीजों 50-55 कि.ग्रा. प्रति हेक्टेयर की दर से बुआई की जानी चाहिए। पौधों से पौधों की दूरी 10 सेंमी., कतार से कतार की दूरी 30 सेंमी. तथा गहराई 3 से 4 सेंमी. करनी चाहिए।

❖ **बीज उपचार:** बीजों को खेतों में बोने से 1 से 2 दिन पहले थीरम (2 ग्राम), कार्बेन्डाजिम (1 ग्राम) प्रति किग्रा. बीज की दर से शोधन किया जाना चाहिए। इसके अलावा राइजोबियम (पी.एस.बी.) (फास्फोबेक्टीन) कल्चर के एक पैकेट से 10 किलो बीज के साथ भी उपचारित किया जा सकता है।

❖ **सिंचाई:** बुआई के 40 से 45 दिनों के अंतराल पर पहली सिंचाई तथा फली की अवस्था पर दूसरी सिंचाई करनी चाहिए।

❖ **खाद एवं उर्वरक:** खेतों में नाइट्रोजन, फॉस्फोरस एवं पोटैश का 18:46:20 की अनुपात प्रति हेक्टेयर के साथ 20 किलोग्राम सल्फर अवश्य देना चाहिए। इसके साथ-साथ 1.6 किलो ग्राम बोरॉन प्रति हेक्टेयर शुरुआत में तथा जिंक सल्फेट की 20 किलोग्राम प्रति हेक्टेयर की दर से खेतों में छिड़काव करे। यूरिया (2 प्रतिशत) पानी में मिला कर पत्तों पर छिड़काव भी इस फसल के लिए लाभप्रद है।

❖ **खर-पतवार नियंत्रण:** यांत्रिक विधि में खुरपी आदि से निराई-गुराई करना तथा बुआई से पहले पेडीमेथालिन 30 ई सी / 0.75 से 1 किलो ए.आई. प्रति हेक्टेयर की दर से छिड़काव, बुआई के तुरंत बाद या एक दिन के भीतर करना चाहिए।

बुंदेलखंड क्षेत्र में मसूर फसल के प्रमुख रोग एवं उनका नियंत्रण

बीज अंकुरण नश्वरता: अंकुरित बीज सूख कर मरने लगते हैं। बीज का फफूंदनाशक कार्बेन्डाजिम/2.5 ग्राम प्रति किलो बीज के दर शोधन करने से इस बीमारी से बचा जा सकता है।

विल्ट/उकठा: प्रभावित पत्तियां पीली पड़ने लगती हैं, जड़ों का विकास रुक जाता है और उनका रंग हलके भूरे तथा पौधे अंततः सूख कर मर जाते हैं।

रतुआ रोग : पौधों के फली एवं नए पत्तों पर छोटे पीले दाने की तरह के धब्बे नजर आते हैं जो बाद में हलके भूरे रंग में पत्तियों के दोनों तरफ तथा अन्य भाग में भी नजर आते हैं। ये धब्बे अंततः गहरे भूरे रंग या दूर से देखने पर काले रंग के प्रतीत होते हैं। रासायनिक नियंत्रण हेतु मंकोजेब 75 डब्ल्यू.पी. 0.2 प्रतिशत (2 ग्राम प्रति लीटर) का एक से दो बार, बुवाई के लगभग 50 दिनों के अंतराल पर छिड़काव किया जाना चाहिए।

झुलसा/स्टेमफायलियम ब्लाइट: इस रोग में पौधों से पत्ते गिर जाते हैं, जबकि सबसे ऊपर वाले नए पत्तों से जुड़े रहते हैं। इसके रोकथाम के लिए मंकोजेब 75 डब्ल्यू.पी. 0.2 प्रतिशत (2 ग्राम प्रति लीटर) के दर से 15 दिनों के अन्तराल पर छिड़काव किया जाना चाहिए।